मीमांसिका

आधुनिक विभाग शोध पत्रिका

प्राचीन शास्त्र शिक्षण संस्थानों में आधुनिक विषयों की उपादेयता

प्रधान सम्पादक

आचार्य प्रकाश पाण्डेय

प्राचार्य

मीमांसिका

(आधुनिक विभागीय शोध पत्रिका)

(प्राचीन शास्त्र शिक्षण संस्थानों में आधुनिक विषयों की उपादेयता)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

Accredited with 'A' Grade by NAAC

भोपाल परिसरः, संस्कृत मार्ग, बागसेवनिया, भोपाल (म.प्र.)–462043

मीमांसिका

(आधुनिक विभागीय शोध पत्रिका)

प्रकाशक : प्राचार्य
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
भोपाल परिसर, संस्कृत मार्ग, बागसेवनिया,
भोपाल (म.प्र.) - 462043
Email : rsks_bhopal@gmail.com
Website : www.rsksbhopal.ac.in

संस्करण : तृतीयम् (2018) ।

मूल्य : 200/- (दो सौ रुपये मात्र)

अक्षर संयोजन : रोहित पचौरी

मुद्रक : एस. एम. सिस्टम्स
एम.पी. नगर, जोन-1, भोपाल
E-mail : smsystems65@gmail.com

प्राप्तिस्थलम् : राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
भोपाल परिसर, संस्कृत मार्ग,
बागसेवनिया, भोपाल(म.प्र.)

शुभानुशंसा

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर की विभागीय संगोष्ठियों की श्रृंखला में आधुनिक विभाग की संगोष्ठी का भी सफल आयोजन किया गया। क्योंकि यह विभाग विविध विषयों एवं भाषाओं वाला विभाग है। अत: संगोष्ठी में हिन्दी–अंग्रेजी–संस्कृत जैसी महत्वपूर्ण भाषाओं और इतिहास, राजनीति, शारीरिक शिक्षा, संगणक शास्त्र जैसे विषयों पर प्रस्तुति के अधिक संख्या में प्रतिभागी उन्मुख होते हैं। प्राचीन शास्त्रशिक्षण संस्था में अध्ययनरत छात्रों के लिए यह और भी उपयोगी है, एक प्रकार से आधुनिक युग और तकनीकी से कदम मिलाकर चलने के लिए यह आयोजन एक माध्यम बन जाता है।

विशेष रूप से इस संकलन में – हिन्दया: उन्नयने परिष्कारे च संस्कृतप्राकृतयो: योगदानम्, English Language ; A medium of Promoting and Studying Shastras, वैश्विक भाषाओं की परिष्कारक संस्कृत, प्राचीन शिक्षण प्रतिष्ठानों में आधुनिक विषयों की उपादेयता एवं प्राकृत शिलालेखों में कलिंगराज खारवेल के शिलालेख का महत्व, प्राचीन शिक्षण प्रतिष्ठानों में आधुनिक विषयों की उपादेयता आदि लेख पठनीय है।

संगोष्ठी में पढ़े गए इन पत्रों के पुस्तकाकार होने पर मेरा आशीर्वाद, शुभकामनाएँ।

– आचार्य प्रकाश पाण्डेय
प्राचार्य
रा.सं.संस्थान, भोपाल

संपादकीय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर का आधुनिक विभाग जो अभी मात्र तीन वर्षों से ही अपनी पत्रिका 'मीमांसिका' प्रकाशित कर रहा है, बेहद क्रियाशील एवं संवेदनशील विभाग है। यही वजह है कि इसके द्वारा आयोजित संगोष्ठी में हिस्सा लेने के लिए बड़ी संख्या में प्रतिभागी आकर्षित होते रहें हैं।

शहर के अधिकांश महाविद्यालयों केप्राध्यापक, शोधार्थी और गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति सदैव इसमें रहती है। सौभाग्य यह भी है कि संगोष्ठी के विषय भी इतने नवीन एवं रूचिकर होते हैं कि उन पर लिखे जाने की प्रेरणा संगोष्ठी के मूल प्रयोजन को सिद्ध कर देती है।

इस बार संस्थान के प्राचार्य जी की प्रेरणा से उन छात्रों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है, जो शास्त्री स्तर के हैं, विशिष्ट बात यह है कि इस नयी परम्परा की शुरूआत बहुत सकारात्मक रही, छात्रों ने बहुत परिश्रम से पत्र लिखे और उसका वाचन किया। मुख्य अतिथि के रूप में संस्थान के आधुनिक विभाग के डीन प्रो. शिशिर पाण्डेय एवं क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की अध्यक्षा प्रो. निधि तिवारी मैडम का छात्रों से संप्रेषण करना विभाग और छात्रों के लिए बहुत ऊर्जादायक रहा। अस्तु 'मीमांसिका' अपनी इन्हीं नवीनताओं, संवेदनाओं और ऊर्जा के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है–

डॉ. अर्चना दुबे
संपादिका, मीमांसिका
आधुनिक विभाग, रा.स.सं., भोपाल

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
1.	हिन्दी के उन्नयन एवं परिष्कार में संस्कृत की भूमिका	डॉ. शारदा सिंह	1
2.	वैश्विक भाषाओं की परिष्कारक : संस्कृत	डॉ. अर्चना दुबे	5
3.	प्राचीन शास्त्र शिक्षण प्रतिष्ठानों में आधुनिक विषयों की उपादेयता	डॉ. अशोक कछवाह	8
4	हिन्द्याः उन्नयने परिष्कारे च संस्कृतप्राकृतयोः योगदानम्	डॉ. प्रताप	10
5.	संस्कृत अभिलेखों की इतिहास लेखन में प्रमाणिकता	डॉ. मणि शर्मा	13
6.	प्राकृत शिलालेखों में कलिंगराज खारवेल के शिलालेख का महत्व	डॉ. पंकज कुमार जैन	15
7.	आधुनिक विषयों के अध्ययन-अध्यापन में प्राचीन शास्त्रों की उपादेयता	डॉ. डम्बरूधर पति	18
8.	योग शिक्षण को जन-जन तक पहुँचाने में कम्प्यूटर की भूमिका	डॉ. कंचन जिज्ञासी	20
9.	Indian Games & Physical activities through the ages	Dr. Rajani V.G.	23
10.	उच्च शिक्षा में आई.सी.टी. की भूमिका	सुमित सक्सेना	26
11.	समुद्रगुप्त कालीन प्रयाग प्रशस्ति : इतिहास के आईने में	डॉ. मंजू सिंह	28
12.	संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका	डॉ. अर्पणा बादल	31
13.	उर्दू भाषा के विकास में 'संस्कृत' का योगदान	डॉ. रफत जमाल	33
14.	संगणक एवं अन्तजलि के द्वारा शास्त्र सुरक्षा में एक कदम	नेहा राय	35
15.	व्याकरण शिक्षण के लिए उपलब्ध कम्प्यूटर साधन एवं उनका उपयोग	खुशबू कुमारी	37
16.	प्राचीन शास्त्र शिक्षण प्रतिष्ठानों में आधुनिक विषयों की उपादेयता	श्रीमती प्रीति जैन	41
17.	भारतीय राजशास्त्रे दण्डव्यवस्थायाः प्रासङ्गिकता	प्रियंका सिंह	44
18.	भारतीय इतिहस लेखन में संस्कृत अभिलेखों का योगदान	अमिता सिंह	48
19.	प्राचीन शास्त्रशिक्षण प्रतिष्ठानों में आधुनिक विषय हिन्दी शिक्षण में सेवापूर्व अध्यापकों का शैक्षिक समायोजन	सुशील कुमार	50
20.	आधुनिक साहित्य में प्राचीन शिक्षा	रंजना विश्वकर्मा	52
21.	शास्त्र शिक्षण के लिए अब तक उपलब्ध कम्प्यूटर टूल्स की उपयोग एवं संभावनाएँ	राहुल शर्मा	54
22.	संस्कृत अभिलेखों की इतिहास लेखन में प्रामाणिकता	राजाराम चौबे	55
23.	हिन्दी के उन्नयन एवं परिष्कार में संस्कृत की भूमिका	शिवम तिवारी	57
24.	इतिहास लेखन में संस्कृत अभिलेखों का इतिहास में प्रमाणीकरण	विवेक तिवारी	59
25.	हिन्दी के उन्नयन एवं परिष्कार में संस्कृत की भूमिका	त्रिलोचन माझी	60

क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
26.	शुक्रनीति में वर्णित शासन व्यवस्था	यशराज दुबे	61
27.	राजनीति शास्त्र में वर्णित शासन के सिद्धान्त में नैगम शासन	सिमरन शर्मा	64
28.	राजनीति शास्त्र में वर्णित शासन के सिद्धान्त	अनूप कुशवाह	69
29.	हिन्दी में उन्नयन एवं परिष्कार में संस्कृत की भूमिका	अनीश ढिमोले	72
30.	संस्कृत अभिलेखों की इतिहास लेखन में प्रमाणिकता में वाल्मीकी रामायण के अभिलेखों की भूमिका	प्रज्ञ शुक्ला	75
31.	शास्त्र शिक्षण के लिए अब तक उपलब्ध कम्प्यूटर टूल्स उपयोग एवं संभावनाएँ	सर्वेश्वर शुक्ला	80
32.	हिन्दी के उन्नयन और परिष्कार में संस्कृत की भूमिका	संजय कुमार तिवारी	81
33.	भ्रष्टाचार उन्मूलन के सिद्धान्त, भारतीय शासन के विशेष संदर्भ में	मृत्युंजय मिश्र	83
34.	संस्कृत अभिलेखों की इतिहास लेखन में प्रामाणिकता को सिद्ध करने में अष्टाध्यायी ग्रंथ की भूमिका	दीक्षा	85
35.	इतिहास लेखन में अभिलेखों की प्रासंगिकता	प्रमेश मेहरा	87
36.	शासन के सिद्धांत के अंतर्गत पंचवर्षीय योजना	सलोनी शर्मा	91
37.	संस्कृत अभिलेखों के माध्यम से प्राचीन काल की वर्ण व्यवस्था पर एक दृष्टि	अमित चौबे	94
38.	महाकवि कालिदास एवं उनके साहित्य का संस्कृत अभिलेखों द्वारा इतिहास लेखन में प्रामाणिकता	मिलकुमार	97
39.	संस्कृत अभिलेख की इहिास लेखन में प्रमाणिकता	सुधीर भार्गव	101
40.	शास्त्र शिक्षण में टूल्स का उपयोग एवं संभावनाएँ	बिजलेश त्रिपाठी	103
41.	राजनीतिशास्त्र में वर्णित शासन के सिद्धान्त	सोमू भार्गव	105
42.	राजनीतिशास्त्र में वर्णित शासन के सिद्धांत	अंजली कुशवाह	107
43.	राजनीति शास्त्र में वर्णित शासन के सिद्धान्त	अर्पित शर्मा	112
44.	राजनीति शास्त्र में वर्णित शासन के सिद्धान्त	आनन्द तंवर	115
45.	English Language : A Medium of promoting & studying Shastras	Puskar Tiwari	117
46.	Role of English In promoting and studying Shastras	Ganesh Shinde	118
47.	The contribution of English in promoting Shastras	Aayushi Jain	119
48.	राजनीतिशास्त्र में वर्णित शासन व्यवस्था के सिद्धान्त	सदाशिव नागले	120

हिन्द्याः उन्नयने परिष्कारे च संस्कृतप्राकृतयोः योगदानम्

-डॉ. प्रताप
अध्यक्ष, जैनदर्शन विभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर

वर्तमानसमये हिन्दीभाषायाः किं महत्त्वं वर्तते, सर्वविदितमिदम्। अद्यत्वे यां हिन्दीभाषां वयं वदामः, तस्याः इतिहासः अत्यन्तप्राचीनः विस्तृतश्च विद्यते। यतः वर्तमानहिन्दीभाषा वैदिककालादेव वर्तते सम्बद्धा वर्तते। संस्कृतात् निष्पन्ना इयं भाषा अद्य विश्वे द्वितीयस्थानं याति परस्परसंवादरूपेण। भाषाणां समये-समये रूपं परिवर्तितं भवति अत्र रूपपरिवर्तनात्। संस्कृतं प्राकृतञ्च भाषाद्वयं एकस्मिन् काले एव प्रचल्यमानम् आसीत्। अत्र उभयत्रापि न कश्चिद् मूलभूतभेदः अपितु सादृश्यमेव दृश्यते। भेदः अस्ति चेत् एतावदेव यत् संस्कृतं विशिष्टवर्गस्य विदुषां पण्डितानां च भाषा जाता तथा च प्राकृतं सामान्यप्रजानां भाषा सञ्जाता। संस्कृतं परिष्कृता परिशुद्धा भाषा वर्तते प्राकृतञ्च प्रकृतिस्वरूपे मुखसारल्यरूपे विद्यते। प्राकृतभाषायाः परम् अपभ्रंशभाषा आगता तदनन्तरम् अवहट्टभाषा, यस्याः अपरनाम 'प्राचीनहिन्दी' अपि वर्तते। ततः एव आधुनिकहिन्द्या रूवरूपं समक्षमस्माकम् आगतम्।

संस्कृतप्राकृतहिन्दीभाषाणां परस्परं वर्णनीयः सार्थकश्च सम्बन्धः वर्तते। हिन्दीभाषायाः कल्पना अपि न शक्या संस्कृतप्राकृतयोर्विना। हिन्दीभाषा शक्तियुता प्रभावशाली च यदि वर्तते तर्हि तत्र संस्कृतप्राकृतयोः अवदानं वर्तते। हिन्दी भाषायां चतुर्विधशब्दाः गृहयन्ते - तत्समशब्दाः, तद्भवशब्दाः, देशजशब्दाः, विदेशजशब्दाः चेति। अत्र तत्समतद्भवशब्दाः प्रामुख्यं यान्ति, तथा च हिन्दीभाषा निष्प्राणा वर्तते उभयविधशब्दान् विहाय। तत्समशब्दाः ये शब्दाः संस्कृतभाषातः परिवर्तनं विना हिन्दीभाषायां स्वकृताः प्रयुक्ताः च ते तत्समशब्दाः भवन्ति, यथा- अग्निः - अग्नि, हस्तः - हस्त, कार्यम्-कार्य इत्यादयः। तद्भवशब्दाः ते भवन्ति ये संस्कृतशब्दाः किञ्चिद् परिवर्तनं कृत्वा हिन्दीभाषायां प्रयुक्ताः भवन्ति, यथा- अग्निः - आग, हस्तः - हाथ इत्यादयः। अत्र कथनीयमिदमपि वर्तते यत् हिन्दीभाषायां तत्समतद्भवदेशजशब्दानां प्रयोगस्य आधारे प्राकृतभाषा दृढ़तया विराजमाना वर्तते। यथा- 'हस्तः' अस्मात् शब्दात् 'हाथ' इति शब्दः आगतः। अयं शब्दः सिद्धः कथं भवति? प्राकृतभाषां बिना निरुत्तराः वयम्। 'हस्तः' अस्य शब्दस्य प्राकृतभाषायां 'हत्थ' इति भवति।[१] ततः जनानां मुखसुखात् यथाकाले 'हाथ' इति परिवर्तनं जातम्।

प्राकृतभाषायाः शब्दाः तु वेदेषु अपि प्राप्यन्ते। यथा- 'क्षुद्रक' स्थाने 'क्षुल्लक' इतिशब्दः।[२] संस्कृतनाटकेषु अपि प्राकृतभाषा सम्प्राप्ता भवति, यथा कालिदासकृते अभिज्ञान-शाकुन्तले स्त्रीपात्राणि प्राकृतभाषां वदन्ति, यथा- नटी वदति -

अज्ज ! इअम्हि आणबेदु अज्जो। को णिओओ अणुचिट्ठीअदुत्ति।[३]

आर्य ! इयमस्मि। आज्ञापयत्वार्यः। को नियोगोऽनुष्ठीयतामिति। एवं प्रकारेण।

संस्कृत माता वर्तते हिन्दीभाषा च पुत्री तस्या: इति मन्यते सर्वैरेव। हिन्दीभाषाया: अस्तित्वे प्राणप्रदायिनी भाषा संस्कृतभाषा एव नान्या। हिन्दीभाषायां यदा तत्समशब्दानां प्रयोगो क्रियते, तदा हिन्दीभाषा केवलं भाषा न भवति अपि तु 'कामायिनी' सदृशकाव्ये सुसज्जिता भवति। हिन्दीभाषाया: ये उद्भट्टविद्धांस: अभवन् तै: सर्वैरेव संस्कृताधारयुत: सुन्दर: काव्यरूपप्रासाद: निर्मित:। हिन्दीभाषाया: कल्पना अशक्या संस्कृतात् ऋते। हिन्दीभाषाया: शब्दसम्पदा संस्कृतशब्दै: परिवर्धिता सम्वर्धिता चेति। कस्या: अपिभाषाया: शब्दसंग्रहं विना अस्तित्वं नास्त्येव। तथा च हिन्दीशब्दसंग्रहे संस्कृतस्य वर्तते विशिष्टस्थानम्। य: संस्कृतं जानाति अवगच्छति, तस्य हिन्दीभाषाया: उपरि तु अधिकार: भवत्येव। तत्समशब्दयुतहिन्द्या: स्तर: स्वरूपञ्च भिन्नमेव भवति। उत्कृष्टतां याति भाषा। तद्भवशब्दैरपि हिन्दीभाषा पूर्णतां याति। न तत्र वैशिष्ट्यं तद्भवशब्दान् विहाय। शब्दगौरवं विना भाषा निष्प्राणा भवति, हिन्दीभाषां प्राणत्व प्रददाति संस्कृतभाषा।

हिन्दीभाषायां संस्कृतभाषाया: किं महत्त्वमिति तु अस्माभि: ज्ञातम्। हिन्दीभाषाया: उपरि प्राकृतभाषाया: अपि वर्णनयोग्य: महत्त्वपूर्ण: प्रभाव: दृश्यते एव। इदं वदाम चेत् नास्ति अतिशयोक्ति: अपि नु सत्यमेव नास्ति विप्रतिपात्त: न च वर्तते कश्चिद् संशय: यत् हिन्दीभाषा प्राकृतभाषाया: एव नूतनस्वरूपम् अस्ति। नैका: देशजशब्दा: प्राकृतभाषायां प्राप्यन्ते, तेषां प्रयोग: जनै: वार्तालापे क्रियते। संस्कृते अपि ते शब्दा: न प्राप्यन्ते। संस्कृतं यस्मिन् काले सम्भाषणभाषा आसीत् तस्मिन्नेव काले सामान्यजना: प्राकृतभाषां प्रवदन्ति स्म। प्राकृतसमीपस्था तस्या: पुत्री वा वर्तते हिन्दीभाषा। प्राकृतभाषाया: क्षेत्राधारेण नामानि तथा च भेदा: अपि सन्ति, यथा- महाराष्ट्री-प्राकृतस्य क्षेत्रं सुव्यापकमासीत्। शौरसेनीप्राकृतस्य स्थानं मगध प्रान्त: आसीत्। पैशाचीप्राकृतस्य प्रयोग: भारतस्य उत्तरपश्चिमक्षेत्रे भवति स्म।[४] प्राकृतभाषाभ्य: एव अपभ्रंशानाम् उदय: जात: ततश्च आधुनिकहिन्द्या: स्वरूपं प्राप्तम्। संस्कृतनाटकेषु अपि प्राकृतभाषाया: प्रयोगो दृश्यते। तत्रापि कथनस्य अभिप्रायोऽयमेव यत् सामान्यजनानां भाषा प्राकृतम् आसीत्।

अद्यत्वे हिन्दीभाषायाम् अधिकांशरूपेण येषां शब्दानां प्रयोगो भवति ते तत्समतद्भवशब्दा: एव सन्ति। त्रिविधशब्दा: इमे प्राकृतस्वरूपं प्राप्य एव हिन्दीभाषायां प्रयोगयोग्या: भवन्ति उत वा एभिरेव हिन्दीभाषाया: स्वरूपं निर्मितं भवति। यथा अस्माभि पूर्वमुक्तम्-'हस्त:' इत्यस्य शब्दस्य 'हत्थ' इति प्राकृते भवति, हिन्दीभाषायाञ्च 'हाथ' इति रूपं भवति। 'हस्त:' इत्यस्मात् 'हाथ' इत्यत्र पर्यन्तं या परिवर्तनप्रक्रिया वर्तते सा प्राकृतप्रक्रिया एव। प्राकृतिकरूपेण स्वाभाविकरूपेण वा शब्देषु परिवर्तनं भूत्वा एव प्राकृतस्वरूपेण स्वभाविकरूपेण वा शब्देषु परिवर्तनं भूत्वा एव प्राकृतस्वरूपं शब्दै: प्राप्तम्। यथा- 'रूख' इति शब्द: हरियाणाप्रदेशे अद्यापि 'वृक्ष' इत्यर्थे प्रयुज्यते। अत्र 'वृक्षे' इत्यस्य शब्दस्य 'रुक्ख' इति प्राकृतम्, ततश्च परिवर्तने सति 'रूख' इत्येवं परिवर्तनं भवति। अन्यानि अपि उदाहणानि सन्ति-

संस्कृतम्	-	**प्राकृतम्**	-	**हिन्दी**
यथा	-	जह	-	जैसे
तथा	-	तह	-	तैसे
य:	-	जो	-	जो
शय्या	-	सेज्जा	-	सेज
ब्रू	-	बोल्लइ	-	बोलना

चिन्त्	–	सोच्चइ	–	सोचना
स्था / तिष्ठ्	–	ठाइ	–	ठहरना
ज्ञा	–	जाणइ	–	जानना
शिक्ष्	–	सिक्खइ	–	सीखना

एवं प्रकारेण नैका: प्राकृतशब्दा: हिन्दीभाषाया: स्वरूपं सौन्दर्यञ्च वर्धयन्ति।

इति तु सुस्पष्टं जातमेव यत् हिन्दीभाषाया: अस्तित्वं संस्कृतप्राकृतभाषयो: आधारत्वेन राजते। हिन्दीभाषाया: उन्नयने परिष्कारे च भाषयो: द्वयो: विशिष्टस्थानं विलसति। संस्कृतप्राकृतयो: ज्ञानात् हिन्द्या: स्तर: स्वाभाविकरूपेण वृद्धिं याति। हिन्दीभाषाया: विकाससोपाने संस्कृतप्राकृतयो: स्थानम् अतीव विशिष्टं राजते किन्तु इदमपि ज्ञातव्यं ध्यातव्यञ्च यत् हिन्दीभाषया स्वविशिष्टस्वरूपं गौरवेण प्राप्तम्। विशिष्टभाषारूपेण विश्वे अस्मिन् स्वस्य संस्थापनं कृतम्। स्वस्य महत्त्वं प्रासङ्गिकत्वञ्च विशिष्टत्वेन प्रतिपादितम्। तथा च विश्वे सर्वतोऽधिकभाषमाणा द्वितीया भाषारूपेण प्रतिष्ठिता सञ्जाता।

सन्दर्भग्रन्थसूची: -

1) सिद्धहैमशब्दानुशासनम् - अष्टम: अध्याय: - प्राकृतव्याकरणम्
2) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नारायण वर्मा - पृष्ठ-01
3) अभिज्ञानशाकुन्तलम् - प्रथमो अंक
4) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नारायण वर्मा - पृष्ठ-02
5) सिद्धहैमशब्दानुशासनम् - अष्टम अध्याय: - प्राकृतव्याकरणम्

सहायकग्रन्थसूची: -

1) हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. श्रीनिवास शर्मा
3) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नारायण वर्मा
4) संस्कृत हिन्दी शब्दकोश -
5) प्राकृत हिन्दी शब्दकोश -



भारतीय राजशास्त्रे दण्डव्यवस्थायाः प्रासङ्गिकता

-प्रियंका सिंह
शोधछात्रा राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान,
मा.वि.वि. भोपाल परिसर, भोपाल-462043

प्रजा सुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं हितम्॥[१]
पुरा स्वर्ण चटका यासीत् ह्यविपन्नां स्थितिं गता।
आर्यदेशोऽद्य विस्तृत्य स्वजगद् गुरुगौरवम्॥[२]

निखिलजगति वंद्यः जगद् गुरुगौरवपदप्रतिष्ठितः स्वर्णविहगः इति ख्यातः सुसमृद्धः भारतदेशोऽद्य कथं हीनताभावग्रस्तः विकासशीलदेशेषु परिगण्यते यदा भारते ज्ञान-विज्ञानस्य सूर्योदयः जातः। तदा येषु देशेषु मानवः पशुतुल्योऽसभ्यः आसीत्, ते देशाः प्रगतिशीलाः मन्यन्ते। आर्थिकदृष्ट्या सुसम्पन्नाः ते संसारस्य नेतृत्वं कुर्वन्ति। अन्यान् देशान् स्वकाष्ठपुतलिकेन नर्तयन्ति।

किमत्र कारणं इति अनुसंधानं क्रियते चेत् तदा ज्ञायते यत् - लार्डमेकाले द्वारा प्रवर्तितशिक्षापद्धत्या शिक्षिताः कृष्णवर्णीयाः आंग्लाः अस्य देशस्य नेतारः समभवन्। ते भारतस्य कर्णधाराः अभूवन्। येषां मनसि विदेशेषु यत्किमपि विद्यते तच्छ्रेष्ठं भारतीयं हेयं इति भावना पूरिता आसीत्।

राज्यं हि नाम राजधर्मानुवृत्तिपरस्य नृपतेर्महदप्रीतिस्थानम्।[३]

भारतस्य समस्तसमस्यानां मूले संप्रति भारतस्य विकृता शासन व्यवस्था किं वा राज्यव्यवस्था वर्तते। यतोहि भारतस्य प्रकृतिं अविचिन्त्य डॉ. भीमराव अम्बेडकर नेतृत्वे या संविधानसभा घटिता तया विश्वस्य देशानां संविधानानां सम्मेलनं कृत्वा बृहत्तमं संविधानं निर्मितं तेन विकृतेन संविधानेन संचालिता राजव्यवस्था भारतस्य कृते कदापि हितावहान भवितुं शक्यते।

भारतस्य राजव्यवस्था कृते पुरातन राजशास्त्रव्यवस्था अद्यापि प्रासङ्गिकी विद्यते इति विषये विश्लेषणं वयं प्रस्तुमः। भारतस्य राजव्यवस्था विषये विश्व प्रसिद्धः ग्रंथः चाणक्यस्य किं वा कौटल्यस्य अर्थशास्त्र विद्यते। अस्मिन् ग्रंथे न केवलं कौटल्यस्य राजशास्त्र विषयक सिद्धान्ताः विद्यन्ते। अपितु भारतस्य सर्वेषां राजशास्त्रीय पुरातनाचार्याणां मतानां संग्रहणं कृत्वा तत्र स्वकीय मतमपि संयोजयित्वा चाणक्य एनं शास्त्रं प्रणीतवान् उक्तं यथा-

पृथिव्याः लाभे पालने च यावन्त्यर्थशास्त्राणि पूर्वाचार्यैः।
प्रस्तावितानि प्रायशः तानि संकृत्यैकमिदमर्थशास्त्रं कृतम्॥[४]

---

१ कौ.अर्थ.१.१४.१८
२ बनवारीलालशास्त्री राजस्थान।
३ मुद्राराक्षस ३.४ सुभाषित पृ.१५३॥
४ कौ.अर्थ. १.१.१
५ कौ.अर्थ. १.२.८
६ कौ.अर्थ. १.२.९

प्राचीन भारतीय राजशास्त्रानुसारं राजव्यवस्थाया: आधारभूततत्वानि इमानि सन्ति-

चतस्र एव विद्या इति कौटिल्य:।[५]

ताभिर्धर्मार्थौ यद्विद्यानां विद्यात्वम् ।।[६]

सांख्ययोगो लोकायतं चेत्यान्वीक्षकी धर्माधर्मौ त्र्यामनर्थानर्थौ वर्तायां नयापनयौ दण्डनीयां अन्वीक्षकी बलाबले चौतासां हेतुभिरन्वीक्षमाणा लोकस्योपकरोति व्यसनेऽभ्युदये च बुद्धिमवस्थापयति प्रज्ञावाक्यक्रिया वैशारद्यु च करोति।

प्रदीप: सर्वविद्यानामुपाय: सर्वकर्मणाम् ।

आश्रम: सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षकी मता ।।[७]

अर्थात् राजव्यवस्थाया: चत्वारि आधारभूतत्वानि सन्ति।

1. **त्रयी**- आचारसंहिता नागरिकाणां स्वस्वगुण कर्मस्वभावानुसारं धर्माधर्मौ निरुपिका।
2. **वार्ता**- करव्यवस्था।
3. दण्डव्यवस्था नयानयौ निरुपिका।[९]
4. **आन्वीक्षकी**- लोकायतं सांख्ययोगाश्रितं ज्ञानं वर्तमानकाले नैतिकशिक्षा इति उच्यते।

एषु चतुषु तत्त्वेषु राजनियंत्रणं कथं भवेत्।।

1. **त्रयी**- अर्थात् सर्वेषां नागरिकाणां आचारसंहिता भवति, तदनुगुणं सर्वे नागरिका: आचरणं कुर्यु: तत्धर्माचरणं उच्यते कुत्रापि त्रुटि: भवति तस्य नियमनं दण्ड द्वारा राज्ञ कर्तव्यम्।
2. **वार्ता**- करग्रहणं राज्ञा तेन लोकस्य अप्राप्तस्य प्राप्ति: अभावानां पूर्ति: योग: उच्यते, प्राप्तस्य रक्षणं क्षेम उच्यते। कर द्वारा जनताया: अभावानां निवारणं जायते।।
3. **आन्वीक्षकी** - जनताया: नैतिकशिक्षणं भवेत् तेन जना: जितेन्द्रिय: सन्मार्गगामिन: भवेयु:।
4. **दण्डनीति:** - अनया जना: राजव्यवस्थाया: वशी भवन्ति न्यायस्य रक्षणं अन्यायस्य दमनं भवति।

आसां चतुर्णा विद्यानां वा राजव्यवस्थाया: आधारतत्वानां स्वरूपं कथं भवेत्, कश्च तस्य प्रभाव: परिणाम: भवति इति विवक्षायां कौटल्य: प्रतिपादयति।

दण्डनीति: - तस्यामयत्तालोकयात्रा ।[१०]

तस्माल्लोकयात्रार्थी नित्यमुद्यतदण्ड: स्यात् ।[११]

न ह्येवं विधं व शोपनयनमस्ति भूतानां यथादण्ड: इत्याचार्या: ।[१२]

नेति कौटल्य: ।[१३]

सुविज्ञात प्रणीतौ हि दण्ड: प्रजाधर्मार्थकामैर्योजयति। दुष्प्रणीत: कामक्रोधाभ्यासज्ञानाद्वानप्रस्थ परिव्राजकानामपि कोपयति कियङ्ग पुनर्गृहस्थान।[१४]

---

७ कौ.अर्थ. १.१.१२
८ कौ.अर्थ. १.१.१
९ कौ.अर्थ. १.१८ त: १२ पर्यन्तम् ।
१० कौ.अर्थ. १.५.७
११ कौ.अर्थ. १.५.८
१२ तत्रैव १.५.९
१३ तत्रैव १.५.१०
१४ कौ.अर्थ. १.५.१५
१५ कौ.अर्थ. १.५.१६

अप्रणीतोहिमात्स्यऽन्यायमुद्भावयति।[१५]

अर्थात् दण्डनीतौ राजव्यवस्था आधृता। अतः सुशासनमिच्छुकः शासकः सदा उद्यत दण्डः भवेत् । दण्डेन सदृशः भूतानां वशीकर्ता न अन्यः कोऽपि उपायः इति पूर्वाचार्याणां मतम्। अत्र कौटल्यः स्वमतं उपस्थापयति यदहं मतमिदं न समर्थयामि।

तीक्ष्ण दण्डोहि भूतानामुंजनीयः।

मृदु दण्डः परिभूयते ।[१६]

यथार्हः दण्डः पूज्यः।[१७]

मम सम्मतौ तीक्ष्णदण्डः अर्थात् अत्यंत कठोरदण्डविधानेन प्रजा असन्तुष्टा भवति उत्पीडिता भवति। किन्तु शिथिलदण्डव्यवस्थायाशासकः जनैरुपेक्षितः तिरस्कार पात्रं भवति। अतः यथाऽपराधः तथा दण्डव्यवस्था भवेत्। अपराधं सम्यग्परीक्ष्य, अपराधस्य प्रकृत्यानुगुणं कठोरो वा उदारोदण्डः प्रयोक्तव्यः। तेन प्रजाधर्मार्थकार्ये नियोजिता नियंत्रिता भवति। एतद् विपरीतं दुष्प्रयुक्तेन दण्डेन काम-क्रोध विवर्जिताः परिव्राजकाः वानप्रस्थाः अपि क्रुद्धाः भवन्ति, गृहस्थाः तु भवन्त्येव । किन्तु सम्यग् दण्डप्रयोगो न भवति, चेत् तदा मात्स्यन्यायः प्रवर्तते। अर्थात् बलवान् दुर्बलं भक्षति वर्ग संघर्षश्च प्रवर्तते।

वर्तमान परिप्रेक्ष्ये दण्डव्यवस्थायाः प्रासङ्गिकता -

संप्रति भारते दण्डनीतिः सम्यग् न प्रयुज्यते। अत्र न्याय व्यवस्था अत्यंत शिथिला अस्ति। अपराधस्य निर्णये बहुकालो गच्छति, न्यायालयेषु तत्रापि अपराधी येन केन प्रकारेण दण्डात् मुक्तो भवति। एतादृशाः उदाराः नियमाः सन्ति, तान् रक्षाकवचं विधाय अपराधिनः दण्डभाजाः न भवन्ति। अतो भारते दण्डस्य भयो नास्ति। जनाः निर्भयाः सन्तः अपराधं कुर्वन्ति। आतङ्कवादिनः देशद्रोहं कुर्वन्ति, किन्तु मानवाधिकाराणां रक्षाकवचमावृत्य निर्वाधरुपेण जघन्यापराधं कुर्वन्तः स्वतंत्राः निंशकतया भ्रमन्ति स्व भ्रष्टाचरणं हिंसादिक कुर्वन्ति। यदि वर्तमान समये भारतीय, प्राचीन राजव्यस्थानुगुणं कौटल्यस्य सम्यगध्ययनं कृत्वा भारतीय प्रात्यानुगं दण्डव्यवस्थायाः निर्धारणं भवेच्चेत् तदा भारते सज्जनाः सुरक्षिता स्युः। आतङ्कवादिनः तिरुत्साहिताः स्युः। कौटल्यस्य मृदुदण्डः परिभूयते सिद्धान्तः भारते संप्रति चरितार्थः सन् दरीदृश्यते। अधुना कौटल्यस्य यथार्दण्डः पूज्यः इति सिद्धान्तः आश्रयणीयः।

यतोहि उक्त कौटल्येन आन्वीक्षकी त्रयी वर्तानां योगक्षेम साधनोदण्डः।[१८]

तस्य नीतिर्दण्डनीतिः।[१९]

अलब्धलाभार्थ लब्धपरिक्षणी रक्षित विवर्धिनी वृद्धस्य तीर्थेषु प्रतिपादनी च।[२०]

अर्थात् नैतिकशिक्षायाः आचारसंहितायाः, कर प्रणाल्याः च सम्यक् पालयित्री दण्डनीतिः एव भवति सम्यक् दण्डनीत्या अर्थात् यथेच्छकरग्रहणादेव प्रजाजनस्य योगः। अभावानां निवृत्ति तथा अप्राप्तस्य प्राप्तिः तथा क्षेमः (प्राप्तस्य रक्षणं) च सिद्धयति। अलब्धस्य प्राप्तिका लब्धस्य परिरक्षिका तथा रक्षितस्य विवर्धिका विवर्धित समृद्धेश्च तीर्थेषु च प्रतिपादिनी अर्थात् लोकहितायो जनासु तस्य

१६ कौ.अ. १.५.१२
१७ कौ.अ. १.५.१३
१८ कौ.अ. १.४.४
१९ कौ.अर्थ. १.४.५
२० कौ.अर्थ. १.४.६
२१ चाणक्य प्रणीतसूत्र सं. ५५९
२२ कौ.अर्थ. १.२.१२

विनियोगः कारिका दण्डनीतिः एव।

न्यायमुक्तं राजानं मातरं मन्यन्ते प्रजाः।[२१]

वर्तमान परिप्रेक्ष्ये भारतस्य या दण्डनीति किं वा न्याय व्यवस्था वरिवर्तते, तस्य प्राचीन भारतीय राजव्यवस्थायाः प्रकाशे पुनः समीक्षणं भवेत्। तथा प्राचीन भारतीय दण्डव्यवस्थानुरूपं प्रभावी दण्डनीतिः आवश्यकी इत्यनुभूयते जनैः। अनेन सुस्पष्टं यत् वर्तमान परिप्रेक्ष्येऽपि प्राचीन भारतीय राजशास्त्रस्य प्रासङ्गिकता विद्यते तस्योपेक्षा एव भारतस्य शासनव्यवस्थायाः वैफल्ये मूल कारणम् इत्यस्माकं मतिः।

प्रदीपः सर्वविद्यामुपायः सर्वकर्मणाम।
आश्रयः सर्वधर्माणां शाश्वदान्वीक्षकी मता।[२२]

एतावतोपन्यासेन सुसमेक्षिकयास्माभिः प्रतिपादितं यत् भारतीय राजशास्त्रस्य वर्तमानपरिपेक्ष्येऽपि प्रासङ्गिकता विद्यते एवं,आवश्यकता अस्ति,प्राचीनगौरवं संस्मृत्य स्वपुरातन सिद्धान्तानां महत्वं उपयोगितां च अवगत्य तथानुगुणं कार्यकरणस्य।

वसुधैव कुटुम्बकं विश्वबन्धुत्व।

विश्वबन्धुत्वभावना सर्वेषाम् हृदये राष्ट्रीयभावना वर्तते। तु राजशास्त्रस्य दण्डनीति सुरक्षितं भविष्यति इति मे विश्वासः।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. कौटिल्य अर्थशास्त्रम् 1.1.1
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र, उदयवीरशास्त्री, लाहौर, 1925
3. कौटिल्य अर्थशास्त्र, प्राणनाथ वेदालंकार, लाहौर, 1923
4. मुद्राराक्षसम्, निरुपण विद्यालंकार, साहित्य भण्डार, मेरठ, 1962
5. कौटिलीय अर्थशास्त्र दृवाचस्पति गैरेला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-1,2000
6. राजनीति विज्ञान, अशोककुमार, उपकार प्रकाशन, आगरा-2
7. भारतीय राजनीतिक विचारक, डॉ. आनन्द प्रकाश अवस्थी, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा-22003-04
8. संस्कृत साहित्य में राजनीति, डॉ. किरण टण्डन, चाणक्य के सन्दर्भ जवाहर नगर दिल्ली-7,1990
9. हिन्दू राजशास्त्र, डॉ. सुरेश कुमार जायसवाल,साहित्य प्रकाशन, मालीबाडा, दिल्ली-6, 1998
10. ऋग्वेद- स्वाध्याय मण्डल,किल्ला पारडी (वलसाड) गुजरात।
11. ब्रह्मपुराण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1976

पत्र पत्रिकाएँ आलेख -

1. भ्रष्टाचार निवारण हेतु कौटिल्य अर्थशास्त्र के कुछ कारगर उपाय, हरिओउम् शरण निरंजन, शोध यात्रा, अक्तूबर-जून 2005, ग्वालियर
2. प्राचीन अर्थशास्त्र की अर्वाचीन उपादेयता, हरिओम शरण निरंजन, सम्मेलन पत्रिका, भाग-90 इलाहाबाद।

